Dr. Bibhuti Bhushan, A.I.H., Lecture NO - 16 ①
BA. Part-I, S.N.S.R.K.S college, saharsa

Q. गौतमीपुत्र शातकर्णि (सातवाहन) की प्रारम्भिक जीवन एवम् उपलब्धियाँ का वर्णन करें।

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात मगध (उत्तर भारत) में सत्ता पहले शुंगों और फिर कण्वों के हाथ में आई। उसी प्रकार दक्षिण भारत के साम्राज्यावशेषों पर दो शक्तिशाली राज्यों सातवाहन (दक्षिणापथ) और चेति राजवंश (कलिंग) का उदय हुआ। माना जाता है कि सातवाहनों की शक्ति का उदय सम्भवतः मौर्य शासक सम्राट के मृत्यु के पश्चात तीसरी शताब्दी ई० पू० में ही हुआ था, लेकिन अनेक आधुनिक इतिहासकारों का मानना है कि सातवाहनों का उदय ई० पू० प्रथम शताब्दी के तृतीय चरण में हुआ और वायुपुराण का हवाला देते हुआ कहा गया है कि आंध्रजातीय सिंधुक (सिमुक) कण्व वंश के अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या कर एवम् शुंगों की बची शक्ति को समाप्त कर शासन किया। इस प्रकार माना जाता है कि सातवाहनों का प्रथम शक्तिशाली शासक सिमुक 60 ई० पू० से 37 ई० पू० तक करीब 23 वर्षों तक शासन किया। सिमुक का पुत्र शातकर्णि-I अवयस्क था, इसलिए सिमुक के बाद उसका भाई कृष्ण राजा बना। वो अपना साम्राज्य नासिक तक बढ़ाया जिसकी पुष्टि नासिक गुहा लेख से भी होती है। वह करीब 18 वर्षों तक शासन किया। इसके बाद इसका भतीजा शातकर्णि प्रथम शासक बना। यह (27-17 ई० पू०) करीब

शातकर्णी के बीच का काल अंधकार का युग माना जाता है क्योंकि इस काल में कोई ऐसा प्रतिभाशाली राजा नहीं हुआ जो अपने साम्राज्य को बचा सके। इस अवनति के काल में कई राजा हुए जिनकी पूर्ण जानकारी हमें प्राप्त नहीं होती है लेकिन इसी काल में एक राजा 'हाल' हुआ जो सम्भवत: (20-24 ई०) एक शासक से ज्यादा विद्वान कवि के रूप में विख्यात था। इसने प्राकृत में 'गाथासप्तशती' की रचना जिसमें ग्राम्य जीवन की झांकी मिलती है। ये सातवाहन की दुर्बलता शकों के साथ युद्ध के कारण आई थी। शातकर्णी-I से लेकर गौतमी पुत्र शातकर्णी के पूर्व के काल लगभग 100 वर्ष सातवाहनों के ह्रास का काल था।

गौतमी पुत्र शातकर्णी (106-130 ई०) के नेतृत्व में सातवाहन अपनी खोई हुई शक्ति और प्रतिष्ठा पुन: प्राप्त कर ली। ये सातवाहन वंश का सम्भवत: 23वाँ शासक था। इसके पिता शिवशक्ति तथा माता गौतमी पुत्र बल श्री थी। यह सातवाहन वंश का महानतम शासक था। जिसके नेतृत्व में सातवाहन वंश की सत्ता शिखर तक पहुँचा। गौतमी पुत्र शातकर्णी के बारे में जानकारी इसके नासिक तथा कार्ले से प्राप्त अभिलेखों से होता है। नासिक से उसकी माता गौतमी बलश्री के भी एक ~~अभिलेख~~ प्रशस्ति मिला है, जिससे गौतमी पुत्र शातकर्णी के बारे में विशेष रूप से

continue Lecture NO-17

10 वर्षों के शासन काल में ही सातवाहन साम्राज्य की प्रतिष्ठा को शिखर तक पहुंचाने का कार्य किया। वह दक्षिणापथ के शक्तिशाली राजा बन गया। शातकर्णि-I अंगीय कुल के महारठी राजकुमारी नागनिका से विवाह कर अपनी स्थिति और मजबूत कर लिया क्योंकि महारठी लोग उत्तरी मैसूर में काफी शक्तिशाली थे और इस विवाह से शातकर्णि-I की प्रतिष्ठा और सम्मान इन क्षेत्रों में और बढ़ा। नागनिका के नानाघाट अभिलेख से शातकर्णि-I के शासन-काल के विषय में महत्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती है। इस अभिलेख के अनुसार शातकर्णि ने पश्चिमी मालवा, अनूपप्रदेश (नर्मदा घाटी) तथा विदर्भ (बरार) के क्षेत्रों पर अधिकार किया। उसके साम्राज्य में उत्तरी दक्कन, मध्य तथा पश्चिमी भारत का बड़ा भाग, उत्तरी कोंकण एवम् काठियावाड़ के क्षेत्र शामिल थे। उसने कलिंग के शासक खारवेल से भी युद्ध किया। वह ब्राह्मण धर्म के गौरव को बढ़ाते हुए दो अश्वमेध तथा एक राजसूय यज्ञ करवाया था। प्रतिष्ठान को अपने साम्राज्य की राजधानी बनाकर साम्राज्य को चरम तक पहुँचाया।

शातकर्णी की मृत्यु के बाद इसके अवयस्क पुत्र के संरक्षिका के रूप में नागनिका शासन किया लेकिन अपने साम्राज्य को अक्षुण्ण नहीं रख सकी और सातवाहन साम्राज्य एक बार फिर अवनति की ओर अग्रसर हो गया। शातकर्णि-I और गौतमी पुत्र